डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

बी० ए० स्नातक सेमेस्टर - III
विषय - संस्कृत, MJC - III

कल्प (वेदाङ्ग)

कल्प का अर्थ है- याज्ञिय विधियों का समर्थन और प्रतिपादन। ~~इसे~~ इसे वेद रूपी पुरुष के हाथों के रूप में स्वीकार किया गया है। जिसमें वैदिक कर्मों का व्यवस्थित रूप से वर्णन होता है वह कल्प कहलाता है।

'कल्पो वेद विहितानां कर्मणामानुपूर्व्येण कल्पनाशास्त्रम्'

यह भी कहा जा सकता है कि यज्ञ, विवाह, उपनयन आदि कर्मों का प्रतिपादन जिन ग्रन्थों में किया गया है उन सूत्र ग्रन्थों को 'कल्प' कहा जाता है। कल्प को कल्पसूत्र के नाम से भी जाना जाता है। इन कल्पसूत्रों को चार वर्गों में विभाजित किया गया है जिनका परिचय इस प्रकार है-

(i) श्रौतसूत्र -

श्रौतसूत्रों का प्रमुख विषय है- श्रुतिप्रतिपादित महत्वपूर्ण मखों जैसे - दर्श पौर्णमास, चातुर्मास्य, पिण्डपितृ, सोमयाग, वाजपेय, राजसूय, अश्वमेध, पुरुषमेध आदि का वर्णन। वेदानुसार श्रौतसूत्रों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

ऋग्वेदीय श्रौतसूत्र - आश्वलायन तथा शांखायन (कौषीतकि)।

यजुर्वेदीय श्रौतसूत्र - पारस्कर अथवा

कात्यायन (शुक्लयजुर्वेदीय)। बौधायन, आपस्तम्ब, सत्याषाढ़, वैखानस, भारद्वाज, कठ, वाधूल, मानव, मैत्री, वाराह (कृष्णयजुर्वेदीय)।

सामवेदीय श्रौतसूत्र -

लाट्यायन, द्राह्यायन, मशक, खादिर तथा जैमिनीय।

अथर्ववेदीय श्रौतसूत्र -

इस वेद पर मात्र एक 'वैतान' श्रौतसूत्र ही मिलता है।

(ii) गृह्यसूत्र -

इसमें सोलह संस्कारों, पञ्च महायज्ञों, पाक यज्ञों, गृहप्रवेश, गृहनिर्माण, रोगनिवारक विधियों एवं संस्कारों का वर्णन है। इन सूत्रों का वेदानुसार परिचय इस प्रकार है -

ऋग्वेदीय गृह्यसूत्र -

आश्वलायन तथा शांखायन (कौषीतकि)।

यजुर्वेदीय गृह्यसूत्र -

कात्यायन (कातीय/पारस्कर), वाजसनेय (शुक्ल यजु), बौधायन, आपस्तम्ब, सत्याषाढ, वैखानस, भारद्वाज, कठ, वाधूल (कृष्णयजुर्वेदीय)।

सामवेदीय गृह्यसूत्र -

गौतम, गोभिल, जैमिनीय, खादिर।

अथर्ववेदीय गृह्यसूत्र –

इस वेद पर केवल एक 'कौशिक' सूत्र ही प्राप्त होता है।

(iii) धर्मसूत्र –

धर्मसूत्रों में नीति, रीति, धर्म, चारों वर्णों, प्रथाओं, चारों आश्रमों के कर्तव्यों तथा सामाजिक नियमों की विवेचना की गई है। वेदानुसार धर्मसूत्रों के नाम इस प्रकार हैं–

- ऋग्वेदीय धर्मसूत्र – इस वेद पर मात्र एक 'वशिष्ठ धर्मसूत्र' प्राप्त होता है।
- यजुर्वेदीय धर्मसूत्र – हारीत तथा शंख (शुक्ल यजुर्वेदीय), बौधायन, आपस्तम्ब, वैखानस, हिरण्यकेशी, विष्णु (कृष्ण यजुर्वेदीय)।
- सामवेदीय धर्मसूत्र – इस वेद पर 'गौतम' नामक मात्र एक ही धर्मसूत्र उपलब्ध होता है जो सबसे प्राचीन है।
- अथर्ववेदीय धर्मसूत्र – इस वेद पर कोई भी धर्मसूत्र प्राप्त नहीं होता है।

(iv) शुल्ब सूत्र –

इन सूत्रों में यज्ञवेदी के निर्माण से सम्बन्धित माप तथा वेदी निर्माण से सम्बन्धित नियम वर्णित हैं। शुल्ब का अर्थ है – रस्सी। प्रमुख शुल्बसूत्र इसप्रकार हैं–

classmate
Date
Page

- ऋग्वेदीय शुल्बसूत्र – इस वेद पर कोई सूत्र प्राप्त नहीं होता है।
- यजुर्वेदीय शुल्बसूत्र – कात्यायन अथवा कातीय (शु+ल यजुर्वेदीय), बौधायन, आपस्तम्ब, वैखानस, हिरण्यकेशी, विष्णु (कृष्णयजुर्वेदीय)।

नोट – सामवेद तथा अथर्ववेद पर भी कोई शुल्बसूत्र प्राप्त नहीं होता है।